CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Research Paper
Received on 12.09.2022
Reviewed on 19.09.2022
Accepted on 28.09.2022

गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता में सामाजिक युगबोध

* डॉ. रिया

मुख्य शब्द– *मुक्तिबोध, काव्य–यात्रा, छायावादी, सामाजिक द्वन्द्व आदि।*

सार-संक्षेप

'युग' काल के खण्ड–विशेष को कहा जाता है और बोध उसके समस्त वातावरण को विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से प्रस्तुत करना है। साहित्य न केवल हमें काल विशेष की प्रवृत्तियों को दर्शाता है बल्कि समाज व राष्ट्र के लिए राह भी बनाता है। कवि मुक्तिबोध जिन्होंने अपनी काव्य–यात्रा छायावादी प्रभाव के साथ प्रारम्भ की जो कि प्रगतिवाद, प्रयोगवाद से होते हुए नयी कविता तक पहुंची। आधुनिक हिन्दी कवियों में मुक्तिबोध एक महत्वपूर्ण नाम है जो जीते जी ख्याति नहीं पा सके किंतु मृत्यु के बाद एकाएक उनका काव्य सफलता के चरम् पर पहुंचा दिया गया। ऊपरी तौर पर मुक्तिबोध को पढ़ना अत्यंत ही कठिन प्रतीत होता है क्योंकि कवि के काव्य का अनुभूति व अभिव्यक्ति पक्ष सामान्य पाठक की समझ से बाहर होता जाता है। उनके बिम्ब, प्रतीक, फैंटेसी पाठक को दुरूह प्रतीत होते हैं।

प्रस्तावना

मुक्तिबोध ने साहित्य के संदर्भ में लिखा है कि– "वस्तुतः लेखक साहित्य द्वारा न केवल समाज के किसी पक्ष या प्रवृत्ति की आवाज को दृढ़ करता है, तथा इस प्रकार न केवल मूल सामाजिक द्वन्द्व में किसी पक्ष या उपपक्ष की प्रवृति, या उस प्रवृति के किसी सूत्र या उपसूत्र की आवाज को मजबूत बनाता है, वरन् ऐसे ही जीवन अनुभव या अनुभूति या तथ्य को उपस्थित करता है जो उस पक्ष या उपपक्ष या प्रवृति या उपप्रवृत्ति को दृढ़ करे।"1 मुक्तिबोध पर प्रेमचन्द जी का प्रभाव था, वे भी उसी साहित्य को श्रेष्ठ मानते थे जो सुलाये नहीं बल्कि जगाये। कवि मुक्तिबोध जनता का साहित्य उसे स्वीकार करते जिससे मानव–जीवन को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं से मुक्ति मिले।

बदलते सामाजिक मूल्यों का मुक्तिबोध की कविता में चित्रण

कवि मुक्तिबोध ने काव्य–सृजन प्रक्रिया को जीवन प्रक्रिया के समानान्तर प्रतिष्ठित किया है। जीवन की अनुभूतियां, संवेदनाएँ ही काव्य को विस्तार देती है। जीवन की तरह ही उनकी कविताऐं लम्बी होती जाती है। इस सम्बन्ध में उनकी पंक्तियां दृष्टव्य है–

"नहीं होती कहीं भी खतम कविता नहीं होती

कि वह आवेग–त्वरित काल–यात्री है

व मैं उसका नहीं कर्ता

पिता–धाता

कि वह कभी दुहिता नहीं होती

परम स्वाधीन है वह विश्व–शास्त्री है

गहन–गंभीर छाया आगमिष्यत् की

लिए वह जन–चरित्री है।

नये अनुभव व संवेदन

नये अध्याय प्रकरण जुड़

तुम्हारे कारणों से जगमगाती है

व मेरे कारणों से सकुच जाती है।"[2]

मुक्तिबोध के काव्य में निम्न मध्यवर्गीय जीवन की छटपटाहट का सफल चित्रण हुआ है। मुक्तिबोध मानवीय मूल्यों व आत्म सत्यों की स्थापना करना चाहते थे। वे अपने काव्य को 'फणिधर' की संज्ञा देते हैं। कवि की समस्या है– नगरों व ग्रामों को सुन्दर व शोषण मुक्त बनाने की –

"मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में

सभी मानव

सुखी, सुन्दर व शोषण मुक्त

कब होंगे।"[3]

कवि मुक्तिबोध शिक्षित युवा वर्ग से उम्मीद रखते थे कि वे समाज के लिए सकारात्मक प्रयत्न करें, ना कि अवसरवादी व स्वार्थी बने। उनका मानना था कि कवि को निज समस्या को मानव समस्या के रूप में चित्रित करना चाहिए–"आज शिक्षित मध्यवर्ग में जो भयानक अवसरवाद छाया हुआ है, आत्म स्वातन्त्र्य के नाम पर जो स्व–हित, स्वार्थ, स्व–कल्याण की जो भाग दौड़ मची हुई है, मारो–खाओ, हाथ मत आओ, का जो सिद्धान्त सक्रिय हो उठा है, उसके कारण कवियों का ध्यान केवल निज मन पर ही केन्द्रित हो जाता है। आज की कविता, वस्तुतः पर्सनल सिच्युएशन की, स्व–स्थिति की, स्व–दशा की कविता है। किन्तु अब जिन्दगी का यह तकाजा है कि वह अपनी इस निज–समस्या को वर्तमान युग की मानव समस्याओं के रूप में देखे और चित्रित करें।"[4]

नारी जाति एवं पिछड़ी जातियों के उत्थान का स्तर

मुक्तिबोध ने पुरुष होकर भी स्त्री की दयनीय स्थिति को महसूस किया। मुक्तिबोध के काव्य में भारत की शोषित नारी के प्रति चिंता का भाव है। मध्ययुगीन स्थिति से लेकर आधुनिक नारी की त्रासदी को मुक्तिबोध ने पहचाना। हमारा समाज सामंती वर्ग की वासना को तो स्वीकार करता है, लेकिन सीता की यातना को इस संदर्भ में नहीं लेता। किन्तु कवि मुक्तिबोध 'सीता' की यातना को भी स्त्री–शोषण के रूप में देखते हैं। वे कहते हैं– "वर्ग–समाजों में पहले स्त्री की स्वतन्त्रता की हत्या की गई। उसे देवी बनाया गया या दासी अथवा वेश्या। इसके अतिरिक्त कुछ नहीं।"[5] नारी के तथाकथित आदर्शीकरण का अर्थ स्त्री को यातना देने के लाइसेंस से अधिक नहीं है। मुक्तिबोध की कहानियों में भी मुक्ति के लिए छटपटाती स्त्रियां व भावनाओं के लिए तरसती अवश महिलाएँ है।

कवि मुक्तिबोध का कहना है कि आज की स्त्री अगर अपने शारीरिक सौन्दर्य के विषय में मध्ययुगीन कवियों के भाव–विचार देखेगी तो पायेगी कि वह किस प्रकार पुरूष की भूख का खिलौना हो गयी थी, उसकी कोई व्यक्तिगत सत्ता नहीं है। आधुनिक नारी भी हर जगह किसी न किसी रूप में कामुक पुरूष–वृत्ति का शिकार होती ही रही है। बड़े–बड़े युगनायक भी इस सत्य को मौन दृष्टा के रूप में स्वीकारते रहे हैं। मुक्तिबोध की ये पंक्तियां–

"खूबसूरत कमरों में कई बार,
हमारी आँखों के सामने
हमारे विद्रोह के बावजूद
बलात्कार किये गये
नक्षीदार कक्षों में।
भोले नित्यार्ज नयन–हिरनी से
मासूम चेहरे
निर्दोष तन–बदन
दैत्यों की बाँहों के शिकंजों में
इतने अधिक
इतने अधिक जकड़े गये
कि जकड़े ही जाने के
सिकुड़ते हुए घेरे में वे तन–मन
दबते–पिघलते हुए एक भाप बन गये।"[6]

दशकों पूर्व रचे गये मुक्तिबोध के काव्य में आज का दलित–विमर्श भी चित्रित हुआ है। समाज में प्रताड़ित, उपेक्षित, गांवों व शहरों से निर्वासित इस वर्ग के प्रति कवि ने सहानुभूति प्रकट की है तथा उनके उद्धार का आशावादी दृष्टिकोण स्थापित करना चाहते हैं। हरिजन बस्ती में बरगद के पेड़ के आस–पास का जीवन, बरगद पर टंगी अँगिया, घाघरे के चिथड़ें उस दलित समाज के यथार्थ को चित्रित कर रहे हैं। हरिजन स्त्रियां गरीबी के कारण फटे वस्त्रों को धारण किये हैं और उन फटे वस्त्रों से झांकता उनका बदन, जिस पर कामुक पूँजीपतियों की आँखें टिकी हुई है–

हरिजन बस्ती में, मंदिर के पास एक

कबील के धड़ पर

मटमैले छप्परों पर

बरगद की एंठी हुई उभरी जड़ पर

कुहासे के भूतों से लटके

चूनर के चिथरे

अँगिया व घाघरे, फटी हुई चादरें

अटक गयी जिनमें एक

व्यभिचारी टक टक की

गंजे सिर, टेढ़े मुंह चांद की कंजी आंख।"[7]

कवि मुक्तिबोध इस उपेक्षित व शोषित वर्ग की बस्तियों का यथार्थ प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष

कवि मुक्तिबोध जनसाधारण की मुक्ति के लिए समाजवाद की स्थापना करना चाहते थे। कवि मुक्तिबोध का मानववाद का क्षेत्र सीमित ना होकर व्यापक था। वे केवल राष्ट्र–जन को ही लेकर नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व–समुदाय को एक करना चाहते थे। उनके दृष्टिकोण की महानता निम्नांकित पंक्तियों में दृष्टव्य हैं–

चाहे जिस देश, प्रांत पुर का हो

जन–जन का चेहरा एक।

एशिया की, युरोप की, अमरीका की

गलियों की धूप एक

कष्ट दुःख संताप की

चेहरों पर पड़ी हुई झुर्रियों का रूप एक

जोश में यो ताकत से बंधी हुई

मुट्ठियों का एक लक्ष्य

पृथ्वी के गोल चारों ओर के धरातल पर

है जनता का दल एक, एक पक्ष

चाहे जिस देश, प्रांत पुरका हो

जन–जनका चेहरा एक।[8]

मुक्तिबोध व्यक्तिगत रूप से भी व अपने काव्य में सबको साथ लेकर चलने के पक्षधर रहे हैं। वे सर्वहारा वर्ग को शोषकों के शिकंजे से मुक्त करवाने के लिए उन्हें एकजुट होने की सलाह देते हैं–

"याद रखो,

कभी अकेले में मुक्ति न मिलती

यदि वह है तो सबके ही साथ है।"[9]

उनकी कविता मध्यवर्गीय जीवन का प्रत्यक्षतः ब्यौरा है। मुक्तिबोध ने जिस प्रकार काव्य रचना की उससे तो यही कहा जा सकता है कि मुक्तिबोध एक मनुष्य नहीं वरन् मनुष्यों की संस्था हैं। वे दार्शनिक, साहित्यकार, शिक्षक, राजनीतिज्ञ, इतिहासकार एवं कवि थे। मुक्तिबोध के जीवन व लेखनी से प्रेरणा लेकर हम आज भी आगे बढ़ सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1	मुक्तिबोध	मुक्तिबोध रचनावली भाग–5	पृ.सं.–73
2	ग.मा. मुक्तिबोध	चाँद का मुंह टेढ़ा है	पृ.सं.–163
3	सं. नेमिचन्द्र जैन/ग.मा. मुक्तिबोध	चांद का मुंह टेढ़ा है	पृ.सं.–164
4	ग.मा. मुक्तिबोध	नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबन्ध	पृ.सं.–33–36
5	सं. नेमिचन्द्र जैन/ग.मा. मुक्तिबोध,	मुक्तिबोध रचनावली –5	पृ.सं.–61
6	एक भूतपूर्व विद्रोही का आत्म–कथन		
7	सं. नेमिचन्द्र जैन/ग.मा. मुक्तिबोध	मुक्तिबोध रचनावली–2	पृ.सं.–298–99
8	सं. नेमिचन्द्र जैन/ ग.मा. मुक्तिबोध	मुक्तिबोध रचनावली–1	पृ.सं.–111–112
9	सं. नेमिचन्द्र जैन/ग.मा. मुक्तिबोध	मुक्तिबोध रचनावली–1	पृ.सं.–59

Corresponding Author
*** Dr. Riya**
Assistant Professor
Shree R.R. Morarka Govt. College, Jhunjhunu
E-mail– riya.budania02@gmail.com, Mob.- 9461584540